

|  |     |
|--|-----|
| I. Einleitung                                      | 7   |
| II. "Seelenzeiten", Zeitmonade und Zeitfeld        | 12  |
| 1. "Grigia"  | 12  |
| 2. "Die Portugiesin"                               | 21  |
| 3. "Tonka"   | 31  |
| 4. "Die Vollendung der Liebe"                      | 42  |
| 5. "Die Versuchung der stillen Veronika"           | 50  |
| 6. Zusammenfassung                                 | 60  |
| III. Schwebende Erzählhaltung und Subjektvarianten | 64  |
| 1. Vorbemerkung                                    | 64  |
| 2. "Grigia"  | 65  |
| 3. "Die Portugiesin"                               | 71  |
| 4. "Tonka"   | 78  |
| 5. "Die Vollendung der Liebe"                      | 85  |
| 6. "Die Versuchung der stillen Veronika"           | 94  |
| 7. Zusammenfassung                                 | 102 |
| IV. Grenzgebiete und "gestimmter Raum"             | 104 |
| 1. "Grigia"  | 104 |
| 2. "Die Portugiesin"                               | 112 |
| 3. "Tonka"   | 118 |
| 4. "Die Vollendung der Liebe"                      | 122 |
| 5. "Die Versuchung der stillen Veronika"           | 131 |
| 6. Zusammenfassung                                 | 139 |
| V. Grenzwertbestimmungen der Sprache               | 143 |
| VI. Literaturverzeichnis                           | 157 |
| Namenregister                                      | 165 |